P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत–मालदीव सम्बन्धः एक नया अध्याय

सारांश

चीन पर्दे के पीछे से ऐसा जाल बुन रहा है, जिससे मालदीव और नई दिल्ली में दूरी बढ़ जाए। हिन्द महासागर में भारत को घेरने के मकसद से चीन मालदीव पर अपनी पकड़ मजबूत बनाने में लगा है। मालदीव अपने कुछ द्वीप चीन को पट्टे पर भी दे चुका है। आशंका जताई जा रही है कि चीन इनका इस्तेमाल भारत पर निगरानी सम्बन्धी गतिविधियों के लिए वहां सैन्य अड्डे बनाने में कर सकता है। ऐसे में भारत समर्थक इब्राहिम मोहम्मद सालेह की मालद्वीव के राष्ट्रपति चुनाव में जीत एवं लोकतंत्र की वापसी चीन के भारत को घेरने की नीति के मंसूबों पर पानी फेर देगा तथा चीन को हिन्द महासागर में प्रतिसंतुलित कर उसकी रणनीति को सफल होने से रोक देगा।

मुख्य शब्द : मालदिवियन डेमोक्रेटिक फ्रन्ट, संवैधानिक संकट,राजनीतिक संकट, लोकतान्त्रिक मूल्य, ऑपरेशन नीर, ऑपरेशन कैक्टस, वन बेल्ट वन रोड, मेरी सिल्क रूट, कूटनीति, रणनीति, क्षेत्रीय सुरक्षा हिन्द महासागर, विस्तारवादी नीति, प्रतिसंतुलन।

राजकुमार बैरवा
सहायक आचार्य,
राजनीतिशास्त्र विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
दौसा, राजस्थान

Please add Aim of the Study in your paper.

प्रस्तावना

हिन्द महासागर का छोटा–सा द्वीपीय देश मालदीव इस साल गहरे सियासी और संवैधानिक संकट से जूझता रहा था। लेकिन अब मालदीव की जनता ने अपने लोकतान्त्रिक अधिकारों का प्रयोग करते हुए चीन समर्थक अब्दुल्ला यामीन को हरा कर संयुक्त विपक्षी गठबन्धन के नेता इब्राहिम मोहम्मद सालेह को विजयी बनाया है। मालदीव चुनाव आयोग के अनुसार सालेह को 58. 3 फीसद मत मिले हैं। मालदिवियन डेमोक्रेटिक फ्रन्ट के नेता इब्राहिम मोहम्मद सालेह नये राष्ट्रपति बने। इब्राहिम भारत के साथ मजबूत सम्बन्धों के हिमायती रहे हैं। वहीं निवर्तमान राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन चीन के कट्टर समर्थक रहे हैं। इब्राहिम मोहम्मद सालेह मालदीव डेमोक्रेटिक पार्टी के नेतृत्व वाले संयुक्त विपक्ष के राष्ट्रपति उम्मीदवार थे। इस गठबन्धन में जम्हूरी पार्टी, अदालत पार्टी और प्रोग्रसिव पार्टी ऑफ मालदीव्स (पीपीएम) का एक धड़ा भी शामिल था।

इस वर्ष फरवरी में मालदीव की सर्वोच्च अदालत ने पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद पर चल रहे मुकदमे को असंवैधानिक करार दे दिया था और कैद किए गए विपक्ष के नौ सांसदो को रिहा करने का आदेश भी जारी किया था। लेकिन राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन के इस आदेश को मानने से इन्कार करने के बाद यह संकट उत्पन्न हुआ था। इसके बाद यामीन ने 15 दिन के आपातकाल की घोषणा करते हुए संसद भंग कर दी थी। सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश अब्दुल्ला सईद और दूसरे जजों के साथ पूर्व राष्ट्रपति मौमून अब्दुल गयूम को गिरफ्तार कर लिया गया था। गिरफ्तारी से पूर्व मालदीव के सुप्रीम कोर्ट ने भारत से विधि का शासन एवं संवैधानिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए मदद मांगी थी। भारत समर्थक मालदीव के पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद ने भी राजनीतिक संकट के समाधान के लिए भारत से त्वरित सैन्य कार्रवाई की मांग की थी। मालदीव का यह सियासी संकट इतना गहरा था कि इसकी हलचल भारत और चीन तक सुनाई दे रही थी।

मालदीव के इस राजनीतिक संकट की जड़े 2012 में तत्कालीन और पहले निर्वाचित राष्ट्रपति मुहम्मद नशीद के तख्तापलट से जुड़ी थी। नशीद के तख्तापलट के बाद अब्दुल्ला यामीन राष्ट्रपति बने। उन्होंने चुन–चुन कर विरोधियों को निशाना बनाया। नशीद को 2015 में आतंकवाद के आरोप में तरह साल जेल की सजा हुई, लेकिन वे इलाज के लिए ब्रिटेन चले गए और वहीं राजनीतिक शरण ले ली। मालदीव के इस संवैधानिक संकट के साथ ही भारत–मालदीव सम्बन्धों में और तनाव आ गया था मालदीव की कम्पनियों ने अपनी विज्ञापन में कह दिया कि भारत नौकरी के लिए आवेदन नहीं करें, क्योंकि उन्हें कामकाजी वीजा नहीं मिलेगा। इस दौरान मालदीव पर चीन के जबरदस्त प्रभाव का अन्दाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि भारत की तरफ से

मालदीव को उपहार स्वरूप दिए गए दो हेलिकॉप्टरों को भी लौटा दिया गया था। यह मालदीव में भारत की सैन्य और कूटनीतिक नीतियों को तगड़ा झटका था। लेकिन अब मालदीव की जनता ने भारत को पुनः मालदीव में अपनी सक्रिय भूमिका के लिए भी मतदान किया है।

अगर भारत हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में अपने पड़ोस के मुल्क के लिए ज्यादा सक्रिय नीति की छाया साफ तौर पर देखी जा सकती है। चीन, जिसका वर्ष 2011 तक माले में दूतावास तक नहीं था, इस छोटे से देश की घरेलू राजनीति में अब प्रमुख खिलाड़ी बन चुका है। चीन लगातार भारत की घेरेबंदी में लगा है। पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह और श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह में चीनी सक्रियता इसका उदाहरण है। हंबनटोटा को चीन ने श्रीलंका से 99 साल की लीज पर लिया है। ऐसे में मालदीव में चीन प्रभाव कम करना भारत के लिए बहुत जरूरी हो गया है। इस लिहाज से भी इब्राहिम मोहम्मद सालेह की जीत भारत के लिए शुभ संकेत है। अभी मालदीव में जिस तरह से हालात हैं, उसके चलते वहां उग्रवाद, धार्मिक कट्टरपन, समुद्री डकैती जैसी समस्याएं तेजी से सिर उठा सकती हैं, जो भारत के लिए चिंता की बात है। ऐसे में भारतीय सक्रियता वहां कितनी आवश्यक है, इसे बखूबी समझा जा सकता है।

भारत बीते दशक से मालदीव के अन्दरूनी मामले में हस्तक्षेप करने से बच रहा है। इसका सीधा फायदा चीन को मिल रहा है। राष्ट्रपति शी जिनपिंग की खास तैयारियाँ यहाँ साफ देखी जा सकती हैं। जिनपिंग जब भारत आए थे, तब वे मालदीव और श्रीलंका होते हुए आए थे। दोनों देशों में मैरी टाइम सिल्क रूट से जुड़े समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, लेकिन जब जिनपिंग भारत आए तो इस मुद्दे पर पूरी तरह से चुप्पी रही। पिछले साल दिसम्बर में मालदीव ने चीन के साथ मुक्त व्यापार समझौता किया। मालदीव की संसद में यह समझौता इतनी तीव्र गति से पारित हुआ कि सत्तारूढ़ सांसदों को बमुश्किल पढ़ने का समय दिया और विपक्ष को अंधेरे में रखा गया। स्थिति यह है कि समझौते का विवरण आज तक न तो सार्वजनिक हुआ है, न ही विपक्ष के साथ इसे साझा किया गया है। दिसम्बर में चीन और मालदीव के बीच बारह करार हुए थे। इनमें चीन की महत्त्वाकांक्षी योजना 'वन बेल्ट वन रोड' भी शामिल है। चीन के लिए 40 हजार की आबादी वाले देश में आर्थिक संभावनाए बहुत सीमित हैं। समझा जा सकता है कि बेजिंग की मालदीव में दिलचस्पी पूरी तरह से रणनीतिक है। चीन पर्दे के पीछे से ऐसा जाल बुन रहा है, जिससे मालदीव और नई दिल्ली में दूरी बढ़ जाए। हिन्द महासागर में भारत को घेरने के मकसद से चीन मालदीव पर अपनी पकड मजबूत बनाने में लगा है। मालदीव अपने कुछ द्वीप चीन को पट्टे पर भी दे चुका है। आशंका जताई जा रही है कि चीन इनका इस्तेमाल भारत पर निगरानी सम्बन्धी गतिविधियों में करने के लिए वहां सैन्य अड्डे बनाने में कर सकता है। ऐसे में भारत के लिए अब सक्रिय होना अपरिहार्य हो गया है। हिन्द महासागर आस्ट्रेलिया, दक्षिणपूर्वी एशिया, दक्षिण एशिया, पश्चिम एशिया और अफ्रीका के पूर्वी इलाके को छूता है। इस इलाके में 40 से ज्यादा देश आते हैं। इसमें दुनिया की चालीस फीसद आबादी रहती है। मालदीव भी इस क्षेत्र का महत्त्वपूर्ण देश है। भारत अधिकतर अन्तरराष्ट्रीय व्यापार हिन्द महासागर से होता है। इसलिए यहां से गुजरने वाले समुद्री मार्गों का सुरक्षित होना भारत के लिए बहुत जरूरी है।

भारत सदैव मालदीव के निकटस्थ मित्र की भूमिका में रहा है। दिसम्बर, 2014 में जब माले में जल संकट हो गया था, तब भारत ने तत्काल मदद करते हुए आइएनएस सुकन्या और आइएनएस दीपक को पेयजल के साथ रवाना किया था। इसके अतिरिक्त भारतीय वायुसेना ने भी हवाई जहाजों के जरिए मालदीव को पानी पहुँचाया था। इस सम्पूर्ण ऑपरेशन को 'ऑपरेशन नीर' के नाम से जाना जाता है। इसके पूर्व भी 1988 में तत्कालीन मालदीव के राष्ट्रपति के अनुरोध पर भारत ने 'ऑपरेशन कैक्टस' को अंजाम दिया था। इसमें सिर्फ नौ घंटे के भीतर भारतीय कमांडो मालदीव पहुँच गए थे और मालदीव में तख्तापलट को कोशिश को नाकाम कर दिया था।

भारत ने पिछले ही वर्ष डोकलाम में अपने हितों की रक्षा के लिए भूटान की जमीन से चीन को चुनौती देने के लिए आक्रामक और सक्रिय कूटनीति को प्रतिबिम्बित किया था। इससे भारत की न केवल वैश्विक प्रतिष्ठा और धमक बनी थी, अपितु आसियान देशों में भी चीनी वर्चस्व के विरुद्ध संघर्ष में भारत को प्रभावी राष्ट्र के रूप में स्वीकार किया गया।

मालदीव के नये राष्ट्रपति की भारत में तीन दिवसीय यात्रा

मालदीव के नये राष्ट्रपति इब्राहिम सालेह मालदीव के राष्ट्रपति बनने के बाद 15 दिसम्बर, 2018 को तीन दिन के दौरे के बाद भारत आना उनकी पहली विदेश यात्रा थी जो भारत–मालदीव के नये प्रगाढ सम्बन्धों को दर्शाता है। मालदीव के राष्ट्रपति चुनाव में भारत के समर्थक सालेह की जीत भारत–मालदीव के सम्बन्धों को फिर से जनदीक लाने में सहायता करेगा।

भारतीय प्रधानमंत्री मोदी ने मालदीव को 1.4 बिलियन डॉलर आर्थिक सहायता प्रदान करने की घोषणा की है जो मालदीव को चीन के ऋण चक्र से मुक्ति पाने में सहायता करेगा। भारतीय प्रधानमंत्री मोदी ने मालदीव को एक पडोसी एवं मित्र देश होने के नाते सदैव सहायता करने के सदैव साथ खड़ा रहने का वादा किया है। भारत–मालदीव ने व्यापार, व्यास्थ्य एवं रक्षा क्षेत्र में परस्पर सहयोग को लेकर समझौते किये है। दोनों देशों ने क्षेत्रीय सुरक्षा को लेकर भी सहमति जतायी है साथ ही एक दूसरे के खिलाफ अपनी भूमि क्षेत्र का प्रयोग नहीं करने का भी समझौता किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः अगर भारत मालदीव में भी लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए सक्रिय रहता है, तो इससे सार्क देशों में भारत को लेकर एक सशक्त संदेश जाएगा। निस्संदेह मालदीव की जनता की इस लोकतांत्रिक जीत से हिन्द महासागर में न केवल लोकतांत्रिक मूल्य मजबूत होंगे, अपितु हिन्द महासागर में भारत की सामरिक स्थिति भी मजबूत होगी। दोनों देश हिन्द महासागर क्षेत्र में

शान्ति एवं सुरक्षा स्थापित करने में फिर एक दूसरे का सहयोग कर है। इस प्रकार भारत फिर से मालदीव को अपने साथ लेकर हिन्द महासागर में चीन की विस्तारवादी नीति को प्रतिसंतुलित कर उस पर अकुंश लगायेगा जो भारत की विदेश नीति को सफल बनाने में मील का पत्थर साबित होगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *David Brewster, "Operation Cactus: India's 1988 Intervention in Maldives. Retrieved 20 December, 2018.*
2. *Maldives water Crisis: India transports 1000 tones of fresh water to male. Retrieved 21 December, 2018.*
3. *The diplomat, "A new chapter in India-maldives relations." Retriend 15 January, 2019*
4. *www.dainikbhaskar.com 25 September, 2018.*
5. *www.jansatta.com 24 September, 2018*
6. *India bringing Maldives into its security -indian express. www.express.com.Retrieved 10 January 2019*
7. *www.The hindu.com 25September 2018*